एक दानव जीव की अद्भुत कहानी

निक बोस्ट्रॉम
www.nickbostrom.com
जर्नल ऑफ मेडिकल एथिक्स, 2005, वॉल्यूम। 31, नंबर 5, पीपी 273-277

कई सदियों पहले की बात है , हमारे पूर्वजों से सुनी हुई एक कहानी हम आपको बताते हैं। हमारे इस ग्रह के सभी लोगों पर एक बहुत ही भयानक दानव जीव का साया छाया हुआ था। ये दानव जीव दिखने में बड़ी-बड़ी हवेलियों और महलों से भी बड़ा था। उसकी चमड़ी बड़ी मोटी थी, और प्राकृतिक कवच के रूप में उसके शरीर पर बड़े बड़े काले रंग के शल्क थे। उसकी आंखें खून भरी थी, और उसके मुँह से राक्षसी हरे रंग की लार टपकती रहती थी। उसने मानव जाति से एक दिल दहलाने वाली मांग की। उसकी भूख तो कुंभकर्ण से भी अधिक विशेष थी, पर उसे कुंभकर्ण के भाँति खाना नहीं चाहिए था। उसकी भूख तो सिर्फ मनुष्यों से ही शांत हो सकती थी। उसने मानव जाति को अपने उत्पात से बचाने के लिए, हर रोज़ सूरज ढलने के समय पर दस हज़ार आदमी और औरतों की बलि मांगी। क्योंकि ये दानव एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर रहता था, उसे ये दस हज़ार लोग वहाँ हाज़िर चाहिए थे। इन अभागे लोगों की किस्मत तो जैसे एक कुएं और खाई के बीच में फंस गई हो। कभी दानव इन्हें तुरंत हड़प कर जाता, और कभी इन्हें महीनों तक अपना बन्दी बनाकर रखता, जिससे वह अपनी इच्छापूर्वक उन्हें अपना भोजन बना सके।

दानव के इस अत्याचार से कितने ही लोगों को तकलीफ हुई, इसका अनुमान लगाना नामुमकिन है। रोज़ ही करीबन दस हज़ार मनुष्यों की भयानक मृत्यु तो होती ही थी, और उनके साथ उनके घरवालों - माता, पिता, बीवी/पति, बच्चे और दोस्तों को जिंदगी भर का गम उपहार में मिलता था।

कई लोगों ने इस दानव का वध करने के लिए काफी प्रयत्न किए। अनेक सिद्ध और मानवीय पंडितों ने मंत्र पढ़े, यज्ञ किए, पर इससे उस दानव पर कोई असर नहीं हुआ। शूर योद्धा, प्रचंड हथियारों के साथ उस दानव पर वार करने गए, पर दूर से ही दानव अपनी मुँह की आग से उनके हथियारों को, और उन योद्धाओं को ढेर कर देता। वैद्यों ने तो जहरीले पदार्थ, उस दानव को धोखे से खिलाए भी, पर दानव की ना तो मृत्यु हुई, ना ही उसकी भूख शांत हुई। एक बात तो साफ थी, इस दानव की आकृति, और आकार ऐसा था कि कई मनुष्य मिल के भी उसका एक बाल भी बांका नहीं कर सकते थे।

अपनी फूटी किस्मत की मजबूरी में आकर रोज़ शाम तक दस हज़ार मनुष्य उस दानव के पास आज्ञा पूर्वक पहुंचा दिए जाते थे। इस दुःखद कार्य के लिए हमेशा बुजुर्ग लोगों का चयन किया जाता था। भले ही बुजुर्ग लोग काफी बुद्धिमान, तंदुरुस्त और शक्तिशाली हो, पर लोगों का यह सोचना था कि, कम से कम बुजुर्गों ने जिंदगी के कुछ साल का उपभोग किया है, तो उन्हीं को मृत्यु के मुँह में भेजना निष्पक्ष रहेगा। कुछ धनी लोगों ने अपने पैसे की ताकत दिखाने की कोशिश की, और कुछ साल तक उस दानव के पास जाने से बचे रहे पर जिसकी मृत्यु आनी है, वो तो आकर ही रहेगी। तब के राजा ने एक कानून की घोषणा कर दी, जिसके मुताबिक कोई भी, यहाँ तक कि खुद राजा भी इस मौत के फंदे से बच नहीं सकते थे।

आने वाली मौत की खबर सुनकर तो मनुष्य का जीवन भय से भर जाता है, और वो एक भयानक मौत की कल्पना करते हुए रोज़ एक मौत मरता है। सभी मनुष्यों को सांत्वना देने के लिए कुछ मुनि उन्हें यकीन दिलाने लगे की उस दानव के हाथ मृत्यु होने के बाद उन्हें एक और जीवन प्राप्त होगा, जहाँ वो दानव के भय से मुक्त खुशी खुशी जिंदगी गुजार सकेंगे। कुछ बुद्धिमान लोगों ने यह समझाने की कोशिश की, कि दानव बड़ा बलशाली है और इसलिए प्राकृतिक विधान के तहत उसे हमें खाने का पूरा हक है। इन बुद्धिजीवी लोगों के मुताबिक, दानव का भोजन बन जाना ही मनुष्य की जिंदगी का उद्देश्य था। कुछ लोगों का मानना था कि दानव मनुष्य जाति की जनसंख्या नियंत्रण कर हमारी भलाई कर रहा है। इन विभिन्न प्रकार की प्रज्ञातमक सोच से मानव जाति को कितना मानसिक सुकून मिला ये तो कोई नहीं जानता। अधिकांश लोग उस भयानक मौत को जो इनका इंतजार कर रही है, उसका ख्याल अपने जहन से निकालने की कोशिश करते रहते थे।

कई सदियों तक मानव जाति की यही दुर्दशा बनी रही। न जाने कितनी मौतें हुईं, कितने घर उजड़ गए, इन सब का अनुमान लगाना भी लोगों ने छोड़ दिया। मानव एक बहुत ही अनुकूलनीय प्राणी है। कितना भी बड़ा कष्ट हो, वो उसका आदी हो जाता है। जिस तरह हम रोजाना की तकलीफों जैसे पानी, ट्रैफिक और इत्यादि को अपने जीवन का हिस्सा समझ लेते हैं, वैसे ही लोगों ने ये दानव के प्रकोप से भी समझौता कर लिया। सदियों के विद्रोह से कोई असर ना देखते हुए, लोगों ने दानव को नष्ट करने की कोशिशे भी बंद कर दी। उन्होंने ये गौर किया कि, अगर समय से रोज़ शाम वो दानव की मांगी हुई बलि पहाड़ तक पहुंचा दें, तो दानव संतुष्ट रहता था और अस्थायी रूप से लोगों को भयभीत करने शहर या गांव में नहीं आता था। इस कारणवश उन्होंने अपनी सारी कोशिशे इस कार्य को समय पर पूरा करने में लगा दी।

अपना अंत पास आता देख, लोग कम उम्र में बच्चे पैदा करने लगे। अक्सर सोलह वर्ष की कन्याएं गर्भवती हो जाती और कई विवाहित जोड़े दर्जन भर बच्चे पैदा करते। इस कारण इंसानों की आबादी कम नहीं हुई और दानव को रोजाना उसका भोजन मिल जाता।

रोज़ इतने सारे मनुष्यों का भोजन करकर, वो दानव धीरे धीरे किंतु लगातार, आकार में बढ़ता चला गया। उसका प्रतिरूप उस पहाड़ जितना बड़ा हो चुका था जहाँ उसने अपना सारा जीवन बिताया था। आकार के साथ उसकी भूख भी तो बढ़नी ही थी। दस हज़ार इंसानों का भोजन तो उसके पेट में छौंक लगाने के बराबर था। अब उसे और भी आलीशान भोजन की आवश्यकता महसूस हुई, और उसने मानव जाति से रोज़ अस्सी हज़ार मनुष्यों की बलि मांगी, उसी पहाड़ पर, वही रोज़ सूर्यास्त के समय, पर अब अस्सी हज़ार मनुष्यों को पीड़ा सहनी थी।

हमारा हृदय तो अस्सी हज़ार लोगों की मौत सुनकर ही दहल जाता, पर राजा को तो क्षण भर भी शोक मनाने की आजादी नहीं थी। रोज़ अस्सी हज़ार लोगों को पहाड़ तक पहुंचाना सरल कार्य नहीं था। इन अस्सी हज़ार लोगों का चयन करना होता था, उन्हें उनके घर से लाना होता था और अंततः पहाड़ तक पहुंचाना होता था।

इस प्रक्रिया को सुविधाजनक और सफल बनाने के लिए, राजा ने एक रेल पटरी बनवाई, जो सीधी उस दानव की पहाड़ी तक पहुंचती थी। हर बीस मिनट में एक रेलगाड़ी, लोगों से खचाखच भरी हुई, उस पहाड़ पर पहुंचती और एकदम खाली सुनसान लौटकर आती। चांदनी रातों में तो रेलगाड़ी के उन अभाग्य यात्रियों को उस विशाल दानव की छायाचित्र दिखती, जिसके बीच में उसकी खून भरी दो लाल आंखें जैसे विनाश की राह दिखा रही हो।

इस संपूर्ण कार्य का प्रबंध करने के लिए भारी मात्रा में राजा ने कर्मचारियों को नियुक्त किया। रजिस्ट्रार लोगों का काम था कि, वो ध्यान रखें कि किन अभागे मनुष्यों की बारी आ गई है दानव के मुँह में जाने की। इन अभागों को उनके घर से ले जाने और पास के रेलवे स्टेशन तक पहुंचाने के लिए काफी सारे ड्राइवर रखे गए। अगर कभी ये ड्राइवर अपने हिस्से के लोगों को स्टेशन पहुंचाने में लेट हो जाते, तो उन्हें वो सीधा पहाड़ पर ले जाते। मुनीम लोग पीड़ित लोगों के परिवारों को मुआवजा देते। इस पूरी व्यवस्था में वो लोग भी थे, जो मौत के मुँह में जाने वाले बिलबिलाते हुए लोगों को, दवा दारू के जरिए सांत्वना देने की कोशिश करते थे।

आने वाली पीढ़ियों ने दानव के विषय में कई उपाधियां हासिल की। कुछ दानव विशेषज्ञ इस यातायात की व्यवस्था को सुधारने में लगे रहे, तोह कुछ विशेषज्ञों ने दानव के शरीर से गिरे हुए उसके दांत और उसके मल त्याग जैसी चीजों को इकट्ठा किया और बड़े ध्यान से उसे तारीख और समय के साथ लेबल कर एक संग्रहालय में जमा कर दिया। वैज्ञानिक और शूरवीरों ने जितना इस दानव के बारे में पढ़ा, उतना ही दानव के अपराजेय होने का डर और प्रबल हो गया। उसकी बड़ी मोटी चमड़ी, उस दानव के लिए एक कवच के समान थी, जिससे कोई भी हथियार पार नहीं हो सकता था।

अब इन सारी गतिविधियों के लिए, और काम पर रखे हुए लोगों की तनख्वाह के लिए धन की आवश्यकता तो होगी ही। इस धन की प्राप्ति के लिए, राजा को मजबूर होकर, संपूर्ण प्रजा पर बड़ी मात्रा

में कर लगाना पड़ा। उस दानव की वजह से कई जीवनों की तो हानि हुई, अब बचे हुए जीवित लोगों की आर्थिक स्थिति को भी हानि पहुंचने लगी थी, पर दानव पर किए गए खर्चों की कहीं रुकावट नहीं हुई। कहा जाता है सभी प्रजा की संपूर्ण आमदनी का कम से कम एक सातवाँ हिस्सा, दानव से जुड़े कार्यों में खर्च हो जाता था।

मानव जाति को बड़ा अद्भुत माना जाता है। यदाकदा कुछ बुद्धिमान इंसान, बड़े उत्तम आविष्कार करते हैं। इन आविष्कारों के बारे में पता चलते ही, बाकी मनुष्य इनकी नकल करने लगते हैं। इस प्रक्रिया में कभी कभी इन आविष्कारों का विकास हो जाता है और मानव जाति प्रगति की ओर बढ़ती रहती है। उन दिनों कई बड़े आविष्कारों का जन्म हुआ, जैसे की कैल्कुलेटर, थर्मामीटर, माइक्रोस्कोप और इत्यादि । इन आविष्कारों का विज्ञान की प्रगति में काफी योगदान रहा। नए प्रयोग कर कर नए परिकल्पना का परीक्षण आसान हो गया था।

इस प्रकार विज्ञान का चक्र जो प्राचीन युगों में कछुए के भाँति आगे बढ़ रहा था, उसने धीरे धीरे एक चीता की गति पकड़ ली थी।

कुछ प्रसिद्ध ज्ञानियों ने भविष्यवाणी की, कि 1 दिन विज्ञान इतना प्रभावशाली हो जाएगा कि मानव हवा में उड़ने जैसे और भी अद्भुत चीजें कर पायेगा। इन ज्ञानियों में एक बहुत सिद्ध ऋषि थे, जो बड़े बुद्धिमान थे, पर उनके विचित्र स्वभाव की वजह से लोग उनकी बातों पर ध्यान नहीं देते थे। इस महाऋषि ने भविष्यवाणी की, कि एक दिन विज्ञान से प्रेरित होकर एक ऐसा हथियार बनेगा जो आखिरकार उस दानव का वध कर, मानव जाति को उसके प्रकोप से मुक्त कर देगा।

किंतु राजा के दरबार में जो विद्वान थे, वो पुराने विचार और सोच में दृढ़ हो चुके थे। उन्होंने इन सारे ज्ञानियों की बातों को नकार दिया। उनका कहना था, कि इंसान कभी उड़ नहीं सकता क्योंकि ना तो वो हल्का है और ना ही उसके पास पंख है। और जहाँ तक दानव की भविष्य में होने वाली वध की बात है, तो सैकड़ों इतिहास की किताबें दानव को मारने की अनगिनत नाकाम कोशिशों का वर्णन करती है। कुछ समय बाद उस महाऋषि की भी दानव के पास जाने की बारी आ गई और उन्हें भी वही पीड़ा झेलनी पड़ी। उनकी मृत्यु के बाद उनके जीवन के बारे में कुछ किताबें लिखी गईं पर इन सभी किताबों में इस दानव वाली बात के बारे में व्यंग्य ही था।

समय का पहिया चलता रहा और उसके साथ कई और आविष्कारों ने जन्म लिया। वो दिन भी आया, जब मनुष्य आकाश में उड़ने लगा और उसके साथ ही और भी अचंभित उपलब्धियां हासिल की।

कुछ बुद्धिमान क्रांतिकारियों ने उस अत्याचारी दानव पर फिर से हमला करने की बात को हवा दिया। वो जानते थे दानव को जड़ से मिटाना काफी मुश्किल कार्य होगा पर उनका विचार था कि अगर ऐसे कोई पदार्थ का इजाद किया जाए जो दानव की चमड़ी से भी ज्यादा मजबूत हो, तो इस पदार्थ को किसी तरह के हथियार में मोड़कर, दानव पर हमला किया जा सकता है। जैसे हर नए विचार के साथ होता है,

शुरुआत में इन क्रांतिकारियों और उनके विचारों को काफी प्रतिरोध सहना पड़ा। सब उनका मजाक बनाते ये कह कर, कि दानव की चमड़ी से भी मजबूत ऐसा कोई पदार्थ तो हो ही नहीं सकता। पर कुछ वर्षों बाद, एक साधारण से प्रयोगशाला में काम करने वाले एक वैज्ञानिक ने एक ऐसे पदार्थ का निर्माण किया, जो दानव की चमड़ी को बेध कर सकता था। इस सफल प्रदर्शन के बाद, काफी पूर्व संदेहवादी लोग दानव को नष्ट करने के संचालन में अपना सहयोग देने लगे। इंजीनियर लोगों ने अनुमान लगाया कि इस पदार्थ की एक मिसाइल बना के अगर पर्याप्त शक्ति से दानव पर वार किया जाए, तो दानव का सर्वनाश हो सकता है। किंतु हर नेक विचार को उसके अंजाम तक पहुंचाने के लिए, धन की आवश्यकता होती है। मिसाइल बनाने के लिए उस पदार्थ का भारी मात्रा में उत्पादन करना था, जिसके लिए काफी बड़ी धनराशि की जरूरत थी।

तो इस छोटे से क्रांतिकारियों के झुंड ने, राजा को एक लिखित निवेदन किया कि वो इस दानव को नष्ट करने के संचालन में मिसाइल बनाने के लिए उनकी आर्थिक मदद करें। दुर्भाग्यवश जिंस वक्त ये खत भेजा गया, राजा एक खूंखार शेर के खिलाफ़ लड़ाई लड़ रहे थे। ये शेर एक किसान की दर्दनाक हत्या कर पास के वन में छुप गया था। इस वजह से पास के सारे गांव वाले भयभीत हो गए थे, कि कहीं वो शेर बाहर आकर उन्हें या उनके परिवार वालों को खा न जाये। इसलिए राजा ने अपने सैनिकों को वन को चारों तरफ से घेर लेने का आदेश दिया, जिसके बाद धीरे धीरे सैनिक वन के अंदर घुस सभी शेरों का शिकार करते गए। अंत में कुल एक सौ त्रेसठ शेरों को मार दिया गया, इससे गांव निवासी खुश थे। लेकिन इस पूरे कार्य के चलते, दानव को नष्ट करने के लिए धन की सहायता मांगने वाला खत कहीं खो गया।

काफी समय तक जवाब नहीं मिलने पर, निवेदकों ने एक बार फिर धन की प्रार्थना करते हुए एक खत राजा को भेजा। इस बार राजा के एक मंत्री से जवाब में एक पत्र आया, जिसके मुताबिक इस वर्ष के दानव से संबंधित बजट के निर्णय लेने के बाद, राजा क्रांतिकारियों की अनुरोध पर विचार करेंगे। उस वर्ष दानव पर अभी तक की सबसे विशाल धनराशि खर्च होने का अनुमान था। दानव के पहाड़ तक पहुंचने के लिए, रेल की एक और पटरी लगाने की भी जरूरत थी, क्योंकि उस क्रूर और निर्दयी दानव ने अब एक लाख लोगों की बलि की मांग की थी, और मौजूदा एक पटरी से इतने सारे मनुष्यों का यातायात मुमकिन नहीं था। जब काफी विचार विमर्श के बाद बजट का निर्णय पूरा हुआ, ठीक उसी समय देश के एक सुदूर कोने से कई नागों के द्वारा तबाही मचाये जाने की खबर आई। राजा सब कुछ छोड़ जल्दी से अपनी सेना लिए इस नए आशंका का समाधान करने निकल पड़े। इस कारणवश एक बार फिर, दानव विरोधी क्रांतिकारियों की मांग पुराने और कबाड़ी वाले सामानों की भांति दब के रह गई।

दानव विरोधी सारे क्रांतिकारियों ने फिर एक सभा बुलाई और देर रात तक काफी विवाद किया, कि अब उनका अगला कदम क्या होना चाहिए। बहुत चर्चा के बाद सूरज की पहली किरण के साथ, ये निर्णय लिया गया कि इस संचालन को अब आम लोगों के समर्थन की जरूरत है। आने वाले कुछ हफ्तों में ये

क्रांतिकारी देश के भिन्न भिन्न राज्यों में गए और आम जनता को दानव को मिटाने वाले पदार्थ की खोज के बारे में बताया, और उनका मिसाइल बनाने का प्रस्ताव भी समझाया। ज़ाहिर तौर पर पहले लोगों ने उनकी बात पर गौर नहीं किया, क्योंकि बरसों से सब एक ही बात सुनते आये थे, कि वो दानव अविस्मरणीय है। पर कुछ बुद्धिमान लोगों ने दिखाए जाने वाले सबूत को जांचा परखा, और मिसाइल बनाने की योजना को समझा। इस तरह यह प्रस्ताव, आज की भाषा में कहा जाए तो वायरल हो गया। लोग इस प्रस्ताव के समर्थन में बड़ी मात्रा में एकत्र होकर रैलियां निकालने लगे।

राजा ने आश्चर्यपूर्वक होकर इस प्रस्ताव के बारे में अखबार में पढ़ा। उन्होंने अपने मंत्रियों से जाना कि, पहले भी दो बार इन क्रांतिकारियों ने राजा से मदद मांगने की कोशिश की थी। रूढ़ीवादी सोच वाले मंत्रियों ने राजा को समझाया, कि ये क्रांतिकारी असल में अशांति फैलाना चाहते हैं। सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, भलाई इसी में है कि लोग दानव से जुड़ी मजबूरी को अपना लें। अगर अब इस दानव को नष्ट कर दिया जाए, तो इस पूरे प्रबंधन में जो लाखों लोगों को नौकरी मिली है, उनका क्या होगा? दानव के नष्ट होने से समाज की कोई भलाई नहीं होगी। और वैसे भी, राजा की तिजोरी में धन कहाँ बचा था, इस बचकाने प्रयास में लगाने के लिए। सब कुछ तो पहले ही शेर और नाग के विरुद्ध जंग लड़ने में, और वो दूसरी रेल की पटरी बनाने में खर्च हो गया था। क्योंकि राजा हाल ही में नागों के विरुद्ध जंग में विजयी होकर लौटे थे, वो काफी लोकप्रिय हो चुके थे। उन्हें अपने मंत्रियों की सलाह तो सही लगी, पर उन्हें डर भी था कि अगर उन्होंने देश में चल रहे आंदोलनों को नज़रअन्दाज़ किया तो कहीं उनकी लोकप्रियता कम न हो जाए। सबको खुश रखने के प्रयास में, उन्होंने सारी जनता के सामने इस प्रस्ताव को पेश करने के लिए एक सुनवाई रखी। सभी क्रांतिकारियों, मंत्रियों, प्रसिद्ध हस्तियों और आम लोगों को न्यौता भेजा गया।

यह सभा वर्ष की सबसे काली अमावस की रात, राजा के महल के सबसे विशाल दरबार में हो रही थी। दरबार खचाखच भरा हुआ था और काफी लोग तो द्वार के बाहर खड़े थे। सभी लोग इस ऐतिहासिक मौके को देखना और महसूस करना चाहते थे, और वहाँ मौजूद सभी लोगों में ,जंग में जाने वाले सैनिकों जितना उत्साह और अधीरता थी।

राजा ने मौजूद सभी लोगों का स्वागत किया और प्रथम, प्रमुख वैज्ञानिक को अपना प्रस्ताव सबके सामने रखने के लिए बुलाया। इस वैज्ञानिक ने एकदम स्पष्ट और संदेह रहित शब्दों में समझाया कि कैसे, दानव की मृत्यु करने के लिए मिसाइल का उपयोग किया जाएगा, और इस मिसाइल को बनाने के लिए उस विशेष पदार्थ का उत्पादन करना होगा। इस पूरे कार्य को संपन्न करने के लिए जितने धन की मांग की गई है, उसके मिलने पर करीबन 15 से 20 साल में ये कार्य मुकम्मल हो सकता है। अगर और भी पैसों की मदद मिली तो काम 12 वर्षों में भी खत्म हो सकता है। पर अफसोस पूर्वक उन्होंने यह भी कहा, कि ये कार्य सफल होगा ऐसा शत प्रतिशत विश्वास से नहीं कहा जा सकता। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने वैज्ञानिक की बातें बड़े गौर से सुनी।

वैज्ञानिक की बातें खत्म होने पर एक ऊंची और बुलंद आवाज वाले आदमी मंच पर आए। ये शख्स, राजा के नैतिकता और सदाचार के विषयों के मंत्री थे। उन्होंने अपनी आवाज से सबका ध्यान आकर्षित कर लिया। उन्होंने कहा, "चलो हम शत प्रतिशत विश्वास करते हैं, कि हमारे होनहार वैज्ञानिकों द्वारा बनाई गई ये रचना काम करेगी और दानव का नाश हो जाएगा। परन्तु सवाल यह है, कि क्या हमें ऐसा करना चाहिए? आज इन वैज्ञानिकों को दानव को मारने का ख्याल आया है। संभव है उन्होंने सोचा होगा कि हम क्यों इस दानव के पेट में जाए? अपने अभिमान और स्वार्थीपन में आकर, उन्हें बरसों से चली आ रही यह प्रथा, उनके अधिकारों पर आक्रमण जैसी लगने लगी होगी। भले ही सब में ये बात समझने की समझदारी ना हो, पर हमारा ये छोटा और सीमित जीवन हमारे लिए एक आशीर्वाद है। इस दानव को नष्ट करना भले ही सुविधाजनक लगे, पर यह कार्य मानवता के गौरव और प्रतिष्ठा को बड़ा कमजोर कर देगा। दानव को नष्ट करने के उप विचारों को ज्यादा हवा देने से लोग अपने व्यक्तिगत जीवन पर ध्यान देना बंद कर देंगे। हमारी सांसें तो चलती रहेंगी पर अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने की कोशिशे छोड़, हम जीना बंद कर देंगे। बेसुध और बुद्धिहीन जीवन की आयु बढ़ाना, जीवन का मूल्य कम कर देगा और ये जीवन का अपमान करने के समान होगा। मेरी बात सभी ध्यान से सुनें, ये प्रकृति का ही नियम है कि वो दानव हम मनुष्य को खाएगा और हम मनुष्य के जीवन का यथार्थ भी उसके पेट में जाके ही होगा।"

सबने पूरे आदर से मंत्री की बातें सुनी। भले ही किसी को मंत्री की बात समझ नहीं आई, किसी को भी उनके शब्दों का तर्क समझ नहीं आया, पर क्योंकि मंत्री ने पूरे आत्मविश्वास के साथ इतने उच्च शब्दों का प्रयोग किया था, कि सभी को लगा, कि उनकी बात मैं बहुत दम है। सबने सोचा, इतने ऊंचे पद पर अगर कोई व्यक्ति कुछ कह रहा है, तो सही कह रहा होगा; हम में कहा इतनी समझ है, सही गलत में फर्क करने की।

जब मौजूद लोग मंत्री की बातों में मोहित हो रहे थे, उस समय एक काफी सिद्ध और बुद्धिमान ऋषि आगे आये अपनी बात कहने के लिए। जब वो मंच की तरफ जा रहे थे, एकाएक भीड़ में से एक छोटा सा बालक ज़ोर से चिल्लाया "दानव दुष्ट है!"

उस बालक के घर वाले, शर्मिंदा होकर उसे चुप करने के लिए डांटने लगे, पर बुद्धिमान ऋषि ने बच्चे को आगे बढ़कर अपनी बात खुलकर रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

पहले तो बेचारा बालक काफी हैरान परेशान लग रहा था, पर ऋषि के प्रेमपूर्वक हाथ आगे बढ़ाने से बालक उनका हाथ थामते हुए मंच पर पहुँच गया। मंच पर पहुँचकर ऋषि ने बालक से पूछा, "क्या आपको दानव से डर लगता है?"

बालक ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया, "मैं सिर्फ अपनी प्यारी सी दादी माँ को वापस अपने पास लाना चाहता हूँ।"

इतना मासूम सा जवाब सुन, ऋषि तुरंत परिस्थिति समझ गए पर वो मौजूद सारी जनता को भी इसी बात का एहसास दिलाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने बालक से पूछा, “क्या दानव ने आप की दादी माँ को आप से दूर कर दिया है?”

रुआंसे होकर, सर नीचा कर, बालक ने जवाब दिया “हाँ, दादी ने मुझसे वादा किया था, कि हर साल की तरह वह मेरे लिए बेसन के लड्डू बनाएंगी। किंतु इस साल सफेद पोशाक में कुछ लोग आए और मेरी दादी को दानव के पास ले गए । दानव बुरा है, वह लोगों का भोजन बनाता है । मुझे मेरी दादी माँ वापस चाहिए!”, इतना बोलते बोलते बालक पूरी तरह फूट-फूट कर, ज़ोर ज़ोर से रोने लगा । तो ऋषि उसे भीड़ में बैठे उसके परिवार वालों के पास वापस ले गए।

इस वारदात के बाद, उस शाम और भी वक्ता अपना पक्ष रखने के लिए आगे आए, पर उस छोटे से बालक ने जिस मासूमियत से अपनी व्यथा सुनाई थी, उसे कोई नज़रअंदाज़ नहीं कर पाया। पहले जो लोग संदेह में थे, अब वो सभी दानव विरुद्ध क्रांतिकारियों के साथ हो गए। सूर्यास्त के साथ दानव के जीवन को अंत करने का निर्णय, राजा ने सब लोगों के भरपूर समर्थन के साथ, बड़े जोश से सुनाया।

देशभर में इस खबर का लोगों ने पूरे उत्साह के साथ स्वागत किया। पटाखे और आतिशबाजी के साथ लोगों ने आने वाले दानव से मुक्त भविष्य का जश्न मनाया।

आनंदपूर्वक माहौल में गम के बादल भी थे। दुर्भाग्यवश मिसाइल को एक रात में तो बनाया नहीं जा सकता था। मिसाइल का उत्पादन पूरा होने तक लाखों लोगों को दानव की बलि चढ़ना ही था। सदियों से दूर दूर तक कोई भी समाधान ना देख कर, सभी ने मजबूरी में अपनी आने वाली मौत से समझौता कर लिया था, पर अब इस मिसाइल ने सभी के दिल में उम्मीद की किरण जगा दी थी, और निरर्थक दानव की बलि चढ़ना किसी को भी मंजूर नहीं था। हर किसी के मुँह पर यही बात थी। जो बात पहले बस कुछ वैज्ञानिकों के बीच सीमित थी, आज वो देश भर में सनसनी खबर बन चुकी थी। जगह जगह पर बड़े पैमाने पर जुलूस और समारोह रखे गए। यहाँ मिसाइल मिशन की गति बढ़ाने के लिए राजा से और धनी लोगों से, अधिक आर्थिक मदद की मांग की गई। राजा ने सब की दलीलें सुनीं और उस साल के बजट में मिसाइल मिशन के लिए एक विशाल भाग आवंटित किया। इसके अलावा राजा ने ये भी घोषणा की, कि वो अपनी कुछ व्यक्तिगत संपत्ति बेचकर उससे जमा होने वाले पैसे इस मिशन के लिए दान करेंगे। इस भेंट के साथ साथ, राजा ने देशवासियों के लिए एक प्रेरक और रमणीय संदेश भी दिया, “आज से हम सबका बस एक ही लक्ष्य होना चाहिए, इस दशक के अंत होने से पहले ही हमें हमारी दुनिया को इस दीर्घकाल से चली आई दानव की तबाही से हमेशा के लिए मुक्त करना है।”

और इस प्रकार दानव और, कहा जाए तो समय के खिलाफ़ सबसे बड़े प्रोद्योगिक मुकाबले का आगमन हो गया। दानव का विनाश करने वाली मिसाइल को बनाने का सिद्धांत तो काफी सरल और स्पष्ट था, पर उसे सफलतापूर्वक वास्तविकता में उतारने के लिए हजारों तरीके की छोटी तकनीकी समस्याओं का

समाधान निकालने की जरूरत थी। ऐसी हर तकनीकी समस्या को हल करने में, बहुत प्रयास और वक्त लगा। परीक्षण मिसाइल हवा में दागी गई, पर कुछ तो तुरंत ही भूमि पर गिर गई और कुछ गलत दिशा में चली गई। ऐसे एक टेस्टिंग सेशन में तो, एक परीक्षण वाली मिसाइल दिशा भटक कर, एक अस्पताल पर जा गिरी, जिसमें काफी डॉक्टर्स और मरीजों की मृत्यु हो गई। इस दुखद घटना ने मिसाइल को सुधारने और परीक्षण की प्रक्रिया में और ज़ोर डाल दिया। मलबे के नीचे दबे लोगों की आवाज जैसे कह रही हो, "हमारा बलिदान व्यर्थ न होने देना।"

सभी के पूरे जोरशोर परिश्रम और असीमित निधिकरण के बावजूद, राजा के निश्चित किये हुए समयसीमा तक मिसाइल तैयार ना हो पाया। दशक खत्म हो चुका था, और वो नीच दानव आज भी खुली हवा में सांसें भर रहा था। समय के साथ यह कार्य अपनी सफलता के काफी करीब पहुँच गया था। मिसाइल की अग्नि परीक्षा सफलतापूर्वक हो चुकी थी। मिसाइल में भरने वाला पदार्थ जिसका सालों पहले एक वैज्ञानिक ने आविष्कार किया था, उसका उत्पादन भी बस खत्म होने ही वाला था। इस बात की घोषणा की गयी कि, मिसाइल की प्रक्षेपण का कार्यक्रम साल के आखिरी दिन रखा गया है, जब मिसाइल में वह पदार्थ को भरकर दानव पर आक्रमण किया जाएगा। इस बात का जश्न मनाने के लिए बाजार में कई प्रकार की वस्तुएं बिकने लगी। उस सब में सबसे ज्यादा बिकने वाली वस्तु थी, एक ऐसा कैलेंडर जो साल के आखिरी दिन की तरफ उलटी गिनती चित्रित कर रहा था।

राजा भी उम्र के साथ, और सबकी कठनाईयां देखकर काफी समझदार हो गए थे। उन्हें अपनी प्रजा की व्यथा स्पष्ट रूप से दिखने लगी थी। वो अपना ज्यादा से ज्यादा समय प्रयोगशाला या कारखाने में बिताते थे, जहाँ मिसाइल का काम चल रहा था, और वहाँ मौजूद मज़दूरों और कर्मचारियों की बढ़ाई करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करते थे। कभी कभी तो वो, खुद का चादर और चटाई ले कर, कारखाने या लैब के फर्श पर ही सो जाते थे। उन्होंने जी जान से मिसाइल रचना और उत्पादन के बारे में भी सीखने की कोशिश की, पर उन्होंने कभी भी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के काम में दखल नहीं दिया, बस उन्हें नैतिक समर्थन देते थे।

साल खत्म होने से सात दिन पहले एक महिला राजा से मिलने आई। यह महिला वही वैज्ञानिक थी, जिन्होंने करीबन बारह वर्ष पहले, भरी सभा में मिसाइल का प्रस्ताव रखा था। वह आज इस पूरे बड़े परियोजना की मुख्य कार्यकारी बन गई थी। राजा उनके आने का समाचार मिलते ही, तुरंत अपने विदेशी अधिकारियों से हो रही बैठक बीच में छोड़, उस वैज्ञानिक से मिलने चले गए। वैज्ञानिक, राजा को हमेशा की तरह थकी हुई दिखी, पर इस बार राजा को उस परेशान चेहरे की आँखों में एक आशा की किरण दिखाई दी।

उन महिला वैज्ञानिक ने राजा को बताया कि, मिसाइल का पूरा काम एक हफ्ते पहले ही पूरा हो चुका था। बस राजा के बोलने की देर है, और एक बटन दबाते ही मिसाइल दानव पर लॉन्च कर दिया जाएगा।

ये खबर सुनकर, पहले तो राजा खुशी से पागल हो गए फिर उन्होंने अपनी भावनाओं पर संयम किया, और काफी देर तक विचार किया। एक हफ्ते पहले मिसाइल लॉन्च करने से लाखों लोगों की जानें बच जाएंगी। पर जल्दबाजी में, अगर किसी गलती से मिसाइल अपने निशाने पर नहीं पहुंची तो अनर्थ हो जाएगा। संभव हुआ तो भी, फिर से दानव को मारने वाले पदार्थ का उत्पादन करने के लिए सालों लग जाएंगे। एक घंटे कड़ी सोच के बाद, राजा ने अपनी जिंदगी का शायद सबसे मुश्किल निर्णय लिया। वैज्ञानिक को राजा ने आज्ञा दी कि, मिसाइल का लॉन्च साल के आखिरी दिन ही होगा । सौभाग्य से मिले इस अधिक सप्ताह का उपयोग, सब कुछ दोबारा जांच करने के लिए किया जाए। वैज्ञानिक को कहीं न कहीं निराशा हुई, पर उन्होंने राजा की आज्ञा मान ली और वहाँ से चली गई।

देखते ही देखते साल का आखिरी दिन भी आ गया। बस थोड़ी ही देर में सूर्यास्त होने वाला था, और मौसम अनुकूल लग रहा था। मिसाइल का लॉन्च दानव के पहाड़ के पास से ही होना था। लॉन्च से जुड़े वहाँ सभी कर्मचारी, अपने दिए हुए कामों में ध्यानपूर्वक लगे हुए थे । राजा और उनके सभी मंत्रीगण पास ही में लगाए हुए, एक मंच से सारी तैयारियों को देख रहे थे। आसपास के हिस्सों में घेरा लगाया हुआ था, पर उसके आगे लोगों की बड़ी संख्या मैं भीड़ मौजूद थी, इस ऐतिहासिक अवसर को अपनी आँखों से देखने के लिए। मंच के ऊपर एक बड़ी घड़ी उलटी गिनती करते हुए, ये दर्शा रही थी कि, मिसाइल लॉन्च को कितना समय रह गया है।

जब करीब पचास मिनट शेष रह गए होंगे, तभी राजा के सुरक्षा मंत्री ने राजा के कंधे पर हाथ रखा और उनका ध्यान घेरे की सीमा की तरफ केंद्रित किया, जहाँ कोई झड़प हो रही थी, ऐसा प्रतीत हो रहा था। वहाँ मौजूद जनता में से एक शख्स, सीमा लांघकर मंच की तरफ भागा चला आ रहा था। पर तुरंत ही रक्षक कर्मियो ने उस शख्स को दबोच लिया, और उसे बंदी बनाकर ले गए। राजा ने इस वाक्य को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया, और उन्होंने अपना ध्यान फिर से मिसाइल लॉन्च की तरफ केंद्र कर दिया। वहाँ से पहाड़ भी दिख रहा था। उस पहाड़ पर बैठे, भोजन करते हुए दानव की छवि साफ दिखाई पड़ रही थी।

लगभग बीस मिनट बाद, राजा ने आश्चर्य से देखा, कि रक्षक कर्मियो द्वारा बंदी बनाया हुआ शख्स, फिर से मंच के पास से गुजर रहा था। वो शख्स मायूस होकर, आंख नीचे कर चल रहा था । उसकी नाक से खून भी निकल रहा था। दो पहरेदार उसे पकड़कर बाहर ले जा रहे थे। एकाएक, उस शख्स की नजर राजा पर पड़ी, और वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा “रोको! रोको! आखिरी ट्रेन को रोको” । राजा ने सोचा, “यह शख्स कौन है? इसकी शक्ल तो जानी पहचानी लग रही है, पर निश्चित रूप से पता नहीं यह कौन है” । उन्होंने अपने मंत्री से कह के, उस शख्स को अपने पास बुलवाया और पूछा कि आखिर बात क्या है।

पूछने पर पता चला, कि वो शख्स दानव के पास लोगों को पहुंचाने की सरकारी प्रक्रिया में नौकरी करता था। उसे कुछ समय पहले, यह ज्ञात हुआ था की मिसाइल लॉन्च से ठीक पहले, दानव के पास पहाड़

तक जाने वाली आखिरी ट्रेन के यात्रियों में उसके पिता का भी नाम था। राजा ने ये डर से कि, दानव को कोई शक ना हो जाए, दुर्भाग्यवश ट्रेन के जरिए उसके पास पहुंचने वाले बलिदान को जारी रखा था। पैतृक प्रेम में आकर, उस शख्स ने राजा से कई मिन्नतें की, ताकि वो आखिरी ट्रेन को पहाड़ पर पहुँचने से पहले रोक दें। ये ट्रेन मिसाइल लॉन्च से ठीक पाँच मिनट पहले पहुंचने वाली थी।

राजा से उस युवक का दुख देखा नहीं जा रहा था, पर मजबूरी में उन्हें कहना पड़ा, "माफ़ करना मुझे, पर मैं ये ट्रेन नहीं रोक सकता। मैं अपनी पूरी प्रजा की जान जोखिम में नहीं डाल सकता।"

युवक ने दलील दी, "पर अक्सर ट्रेन पाँच मिनट देरी से चलती है। दानव को कोई शक नहीं होगा।"

राजा का दिल दुख रहा था, पर उन्हें सबका सोचना था, और इसलिए उनके पास युवक को देने के लिए कोई जवाब नहीं था। हार के उन्होंने अपना मस्तिष्क नीचे कर दिया, और सिर ना में हिला दिया। पहरेदार युवक को मंच से लेकर जाने लगे, पर वो रोता बिलबिलाता कहता रहा, "रोक दो! आखिरी ट्रेन रोक दो!"

राजा आंख बंद कर, एकदम स्तब्ध खड़े रहे, जब तक अचानक युवक के चीखने की आवाज बंद हो गई। आंख खोलकर राजा ने देखा, कि घड़ी में अब बस पाँच मिनट रह गए थे। युवक के पिता, जिस ट्रेन में सवार थे, वो आखिरी ट्रेन दानव के पास पहुँच चुकी थी । अब मिसाइल की, राजा की, और सभी मानव जाति की परम परीक्षा का पल आ गया था।

४ मिनट। ३ मिनट। २ मिनट।

३० सेकंड बचे होने पर, आखिरी कर्मचारी मिसाइल का बटन दबा के उस क्षेत्र से बाहर आ गए।

२० सेकंड। १०,९,८...

प्रक्षेपण स्थल से निकलता हुआ, एक बड़ा आग का गोला दिखाई दिया, और मिसाइल तेजी से पहाड़ की तरफ निकल पड़ी। वहाँ मौजूद सभी लोग - सभी दर्शक, राजघराने के लोग, कर्मचारी, वैज्ञानिक सबकी दृष्टि बस आकाश में तेजी से बढ़ते हुए मिसाइल के अग्र भाग की तरफ थी। साधारण जन, राजा जन, गरीब, अमीर, युवा, वृद्ध, सभी जैसे एक विशाल जीव में परिवर्तित होके, इस पल, इस लम्हे को महसूस कर रहे थे, एक साथ जी रहे थे। सदियों के घनघोर अंधेरे के बाद, जैसे सूरज की एक छोटी उम्मीद भरी किरण, मानव जाति के सभी विपत्तियों का प्रतिशोध लेने, उस दानव के छाती को बींधते हुए, उसके दुष्ट हृदय पर जा गिरी। पल भर के लिए सन्नाटा छा गया । फिर देखते देखते उस दानव की विशाल छवि, थोड़ी लड़खड़ाई और, फिर अपने ही पहाड़ पर जा गिरी। ये देख कर लोगों की खुशी की चीखें, पूरे वायुमंडल में गूंजने लगी । इसी बीच उस दानव की आखिरी सांस, और उसके साथ जुड़ी एक आखरी गर्जना सुनाई दी। आखिरकार सभी मनुष्य अब सदियों से चली आई, इस विकराल दानव की तानाशाही से मुक्त हो चुके थे।

परम आनंद दिखाते हुए लोग, राजा के लिए नारे लगाने लगे, “राजा की जय हो! राजा अमर रहें! हम सब अमर रहें!” राजा के सभी मंत्री भी बेहद खुश होकर, बच्चों के समान एक दूसरे को गले लगाते हुए, इस जीत का जश्न मनाने लगे।

राजा के पास जाकर वो कहने लगे, “बधाई हो! हमने कर दिखाया!”, पर राजा खेदपूर्ण और भावुक होकर बोले, “हाँ, आज हमने आखिरकार दानव को नष्ट कर दिया, पर हमने इतनी देर क्यों कर दी? अगर हमने और भी पहले इस कार्य की शुरुआत की होती, तो शायद पांच-दस साल पहले ही हमें जीत प्राप्त हो जाती और लाखों लोगों की जानें बच जाती ।हमारे हाथ उन सभी के खून से रंगे हुए हैं।”

इतना कहकर, राजा मंच से उतरकर बंदी बने उस युवक के पास गए। उसके पास जाकर, राजा अपने घुटनों पर गिरकर, हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे, “माफ़ कर दो। कृपया कर कर मुझे माफ़ कर दो।” उसी समय आकाश ने अपने द्वार खोल दिए, और मूसलाधार बारिश होने लगी। कीचड़ में भी भीगते हुए राजा, घुटनों के बल खड़े रहे और उस युवक से क्षमायाचना करते रहे, “मुझे तुम्हारे पिता की मृत्यु का बहुत खेद है। मुझे माफ़ कर दो!”

आखिर युवक ने जवाब दिया, “इसमें आपका दोष नहीं है। आपको याद हो तो, बारह साल पहले आप के महल में रखी सभा में, एक छोटा सा बालक सबके सामने रोता हुआ मंच पर आया था और अपनी मृत दादी को लौटाने की जिद कर रहा था। वो मैं ही था। तब मुझे समझ नहीं थी कि, मेरी इच्छा पूरी करना, आपके हाथ में नहीं था। आज मैं आपसे चाहता था, कि आप मेरे पिता को बचा लें, मगर मुझे ज्ञात है कि पूरे मिशन को खतरे में डाले बिना यह करना मुमकिन नहीं था। फिर भी आपने मेरी, मेरी माँ और बहन की जान बचाई है। इसके लिए हम कभी आपका अहसान नहीं भूल पाएंगे।”

भीड़ की तरफ इशारा करते हुए राजा ने जवाब दिया, “इन्हें सुनो। ये आज मेरी जयकार कर रहे हैं, दानव का नाश करने के लिए। जबकि असली वीर तो तुम हो। तुमने बचपन में ही, बुराइ के खिलाफ़ आवाज उठाई थी। तुम्हारे वजह से ही, हम सब एकत्र होकर अजय पर विजय पाने गए।” इतना कहकर राजा ने अपने पहरेदारों को, युवक को मुक्त करने का इशारा दिया, और जाते हुए उससे कहा, “जाओ, अपनी माँ और बहन के पास लौट जाओ। मेरे दरबार में, तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का हमेशा स्वागत रहेगा। और तुम्हारी जो भी इच्छा होगी, मेरे वश में हुआ तो मैं जरूर पूरी करूँगा।”

युवक हाथ जोड़कर, भीड़ में गुम हो गया। अभी भी कीचड़ में बैठे राजा के पास, सभी पहरेदार और मंत्री जमा हो गए। बारिश में भीगते हुए, महंगे वस्त्र पहने हुए व्यक्तियों के चेहरे पर आनंद, चैन और अनगिनत भावनाओं का एकीकरण हो रहा था। पिछले आधे घंटे में पूरी दुनिया ही बदल गई थी। चैन और कुशलता से जीने का हक, मानवता को फिर से प्राप्त हो गया था, एक मौलिक डर समाप्त हो गया था, और ना जाने कितनी धारणाएं, उलट हो गई थी। अपना अधिकांश समय दानव से जुड़े कार्यों में

बिताने वाले मंत्री, अब इस अपरिचित परिस्थिति में क्या भूमिका निभाएंगे, इसका ज्ञात किसी को न था। असमंजस रूप से सभी वहाँ खड़े रहे।

आखिरकार राजा उठे और हाथ कपड़े से साफ किये। राजा के सबसे वरीष्ठ मंत्री ने, सबके मन में चल रहे सवाल को पूछा, “महाराज, अब आगे क्या?”

राजा ने उत्तर दिया, “मेरे मंत्रियों, मेरे मित्रों। आज एक सफर का अंत हुआ है, पर उसी के साथ एक दूसरे सफर की शुरुआत भी हुई है। मानव जाति को इस ग्रह पर जन्म लिए, कुछ ही समय हुआ है। आज बच्चों के भांति, हमारा भविष्य आकाश की तरह खुला और ऊंचा है। इस भविष्य को खुली बाहों से अपनाकर, हम सक्षम कदम आगे बढ़ाएंगे। हमे समय का तोहफा मिला है। इस समय का इस्तेमाल, हम चीजों को सही करने के लिए, चैन से जीवन व्यतीत करने के लिए, अपनी गलतियों से सीखने के लिए और एक गौरवपूर्ण संसार बनाने के लिए करेंगे । आज आधी रात तक राज्य की सभी घंटियां बजनी चाहिए, हमारी मृत प्रजा की याद में। आधी रात के बाद, इस जीत का जश्न मनाते हैं, और फिर मेरे प्रिय मित्रों, एक कार्य में जी जान से लग जाते हैं.. वो कार्य है पुनर्निर्माण!”

* * *

कहानी की शिक्षा

जवानी से बुढ़ापे तक की कहानियाँ अक्सर एक ही बात पर ज़ोर करती है, कि हमें हमारी आने वाली मृत्यु को सजीला तरीके से स्वीकार करना चाहिए। बाजुओं से धीरे धीरे कम होता हुआ जोश और बल, निकट उपस्थित यमदूत पास आते दिखते हैं। ऐसे में हार कर सभी प्राणी अपने बचे खुचे कार्यों को अंजाम देने की कोशिश करते हैं। संपत्ति का बंटवारा, बिगड़े हुए रिश्तों को संभालना, ताकि जब यमदूत आए तब, किसी चीज़ की अधूरी रह जाने का पश्चाताप ना हो। क्योंकि बुढ़ापा और मौत अनिवार्य है, इन बातों पर ध्यान देना ज़रूरी था। अटल बातों के पीछे सर फोड़ने से अच्छा है, हम मन की शांति पाएं।

पर आज की परिस्थिति खास है। भले ही आज भी विज्ञान, प्रभावी रूप से बूढ़े होने की प्रक्रिया रोक नहीं पाया[1] है, आज अनुसंधान की कुछ ऐसी धाराएं हैं, जिससे आगे भविष्य में यह मुमकिन हो सकता है। मृत्यु से जुड़ी कहानियों और विचारधाराएं जो निष्क्रिय तरीके से मौत को अपनाने की सलाह देती है, अब हमें हानि पहुंचाने लगी है । तत्काल रूप से जो हमे योजना बनानी चाहिए, उनमें ये घातक बाधाएं बन रही हैं।

कई विशिष्ट प्रौद्योगविज्ञ और वैज्ञानिक बताते हैं, कि भविष्य में मानवता के उम्र बढ़ने की क्रिया की गति को धीमा करना मुमकिन होगा। सिर्फ इतना ही नहीं, बूढ़े होने की क्रिया पर विराम लगाना और उसे उल्टी दिशा में ले जाना भी मुमकिन होगा। मौजूदा स्थिति में इस उपलब्धि में कितना समय लगेगा,

इसके क्या साधन होंगे, और प्रकृति के नियमों के अनुसार ये मुमकिन भी है कि नहीं, इन बातों में कई वैज्ञानिकों के बीच सहमति नहीं है। दानव की कहानी में, दानव के हाथों मारे जाना, प्राकृतिक तौर से बूढ़ा होने और मर जाने का चित्रलेखन है। उस कहानी के अनुरूप, मानव जाति दो पड़ाव के बीच में है ।पहला पड़ाव जिसमें वो एक ऋषि ने दानव के मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। और दूसरा पड़ाव जहाँ वैज्ञानिकों ने सब को विश्वास दिलाया था, एक अनोखे पदार्थ का आविष्कार करके, जो दानव की चमड़ी के पार जा सकता था।

दानव की कहानी का नैतिक तर्क काफी सरल है। काफी दमदार और नैतिक ज़ाहिर वजह थी, मानव जाति के पास दानव का नष्ट करने की। कहानी से बाहर हमारी परिस्थिति भी अनुरूप और नैतिक तौर से समरूप है। जिसतरह लोग अपने जल्दी जाने वाले रिश्तेदार, और प्रियजनों के गम में रोते थे, हम भी दुख में आंसू बहाते हैं, पर मजबूरी में कुछ कर नहीं पाते। किंतु एक बात स्पष्ट है हमारे पास भी बढ़ती उम्र की प्रक्रिया को जड़ से खत्म करने की, नैतिक, ज़ाहिर और दमदार कारण हैं।

वितर्क यह नहीं है कि, बस मानव जाति की औसत आयु बढ़ाई जाए। बिमारी, कमजोरी भरे साल बिताना तो व्यर्थ है। तर्क ये है कि, मनुष्यता के एकदम तंदुरुस्त और जवान रहने वाले साल बढ़ाए जाएं। अगर शरीर पर बढ़ती हुई उम्र से होने वाले असर को कम किया जाए, या रोक दिया जाए, तो ये मुमकिन हो सकता है। जिस उम्र में आज लोग मृत्यु की मौत में होते हैं, उसी उम्र में कल लोग सवस्थ, फुर्तीले और परिश्रमी हो सकते हैं।

इस कहानी से यह मुख्य शिक्षा मिलती है। इसके अलावा कहानी में अनेक विशेष सीख भी हैं।

1. रोज़ या बार-बार होने वाली पीड़ा, या त्रासदी को लोग अपने जीवन का हिस्सा समझकर, उससे समझौता कर लेते हैं। ऐसे में सौ, पाँच सौ या हज़ार लोगों की मौत, सिर्फ एक आंकड़ा बनकर रह जाती है। इस कहानी में भी पहले भयभीत लोगों ने दानव के, कभी न खत्म होने वाले अत्याचार से समझौता कर लिया, और अपने जीवन के दायरे दानव के इर्द गिर्द खींच लिए। ऐसा करने से आगे वाली पीढ़ियों में कई लोग, दानव की दुष्टता का स्पष्ट रूप से आभास नहीं कर पाए। इसी तरह बढ़ती उम्र के साथ बूढ़ा होने को, हमने जीवन का नियम मान लिया है, जबकि यही कारण है आघात पीड़ा और मृत्यु का।
2. प्रौद्योगिकी विकास संबंधित स्थिर सोच - बहुसंख्य लोग इसी विचारधारा पर अड़े रहे, कि क्योंकि इतिहास में दानव को मारने की सारी कोशिशे नाकाम रही हैं, भविष्य में भी हम कभी दानव को मारने में सफल नहीं हो सकते। उन्होंने चीता की गति समान, प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति को ध्यान में नहीं रखा। क्या हम भी वृद्ध होने के उपचार ढूंढने में यही गलती दोहरा रहे हैं? बिलकुल इस प्रक्रिया को मुमकिन करने में आज काफी बाधाएं हैं, पर कल विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास क्या नए चमत्कार लाएगा ये किसे पता?

3. प्रशासन प्रयोजन में परिवर्तित हो गया - दानव को लगातार समय पर बली पहुंचाने के कार्य में, पूरा एक प्रशासन स्थापित हो गया, जिस को चलाने के लिए आम आदमी की आमदनी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, कर के रूप में जाता था। हमसे लिया हुआ टैक्स एक बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य सेवा पर खर्च किया जाता है। हम नाश से होने वाले नुकसान को कम करने पर ध्यान देते हैं, अस्पतालों और बीमारियों के अनुसंधान पर अरबों खर्च करते हैं, पर उसमें हम यह भूल जाते हैं कि नाश का मूल कारण, हमारे शरीर की बिगड़ती स्थिति है, जिसे रोकने से हम हमेशा के लिए नाश से बच जाएंगे।
4. सामाजिक भलाई से लोगों का नुकसान होने लगा - राजा के मंत्री चिंतित थे, कि दानव के विरुद्ध प्रयास करने वाले क्रांतिकारी सामाजिक समस्याएँ बढ़ा देंगे। उनका मानना था, कि दानव के मृत्यु से समाज की दुर्गति होगी। बहुत सामाजिक व्यवस्थाएँ लोगों की भलाई को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं, पर अगर करोड़ों लोगों की जान बचती है, तो सामाजिक व्यवस्थाएँ बदली जा सकती हैं।
5. अनुचित प्राथमिकताएँ - कहानी में जब शेर ने या किसी कोबरा ने आतंक जमाया, तो राजा ने अपनी सेना और प्रशासन का पूरा ध्यान उस समस्या पर केंद्रित कर दिया। इससे राजा की बड़ी वाह-वाही तो हुई, पर राजा मुख्य विषय पर, जो सारी प्रजा को सदियों से परेशान कर रही थी, उस पर ध्यान नहीं दे पाए।
6. उम्दा शब्द और खोखली बयानबाजी - राजा के मुख्यमंत्री ने बड़ी बड़ी बातें की, मानव की गरिमा और प्रकृति के बारे में। उन्होंने शब्दों के फूल से लोगों का ध्यान असली समस्या से भटकाने की कोशिश की। दूसरी ओर, वो छोटे से बालक ने बिल्कुल सरल से शब्दों में बात का संक्षेप रख दिया। दानव बुरा है, वो लोगों और परिवारों को नष्ट करता है। मूलभूत बस यही बात महत्वपूर्ण है। काल के प्रभाव की भी, आधार रूप से यही सच्चाई है।
7. मसले की अत्यावश्यकता को समझा नहीं गया - कहानी के काफी अंत तक कोई भी मसले की गहराई को समझ नहीं पाया था। जब अंत के क्षणों में, राजा ने विनती करने वाले युवक पर ध्यान दिया, तब उन्हें इस घोर, दुखद त्रासदी का सही अंदाजा हुआ। इसी तरह वृद्ध होने का उपचार ढूंढने को, हमें सहज रूप से नहीं लेना चाहिए। यह एक तत्काल, नैतिक आवश्यकता है। जितनी जल्द हम अनुसंधान प्रक्रिया शुरू करेंगे, उतनी ही जल्द कुछ परिणाम आएँगे। उदाहरण लिया जाए तो अगर हम चौबीस वर्ष के बजाय पच्चीस वर्ष में सफल होते हैं, तो तब भी कैनेडा देश की आबादी से भी बड़ी संख्या के लोग मर चुके होंगे। इस विषय में तो हर मिनट सत्तर जानो के बराबर है। ऐसे में हमें इस विषय के बारे में काफी गंभीरता से सोचना चाहिए।
8. “और फिर मेरे प्यारे मित्रों, एक कार्य में जी जान से लग जाना है, वो है पुनर्निर्माण!”- कहानी में जश्न खत्म होने के बाद, राजा और उनके मंत्रियों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वर्तमान समाज की रचना दानव के भय ने और अनिवार्य मौत ने की थी। आने वाली मौत

सामने देख, जीवन का मूल्य बढ़ गया था, और लोग सार्थक रूप से अपना सीमित जीवन बिताते थे। पर जब मौत से तुलना बंद हो गयी, तो लोगों का जीवन निरर्थक हो सकता था। राजा और उनके प्रशासन को, प्रजा के साथ मिलकर रचनात्मक साधनों का इजाद करना होगा, जिससे व्यक्तितत्व और सामाजिक स्तर पर लोगों का यह नया और लम्बा जीवन फला-फूला रहे। संयोग से मानव जाति, सदा ही अपनी बाहरी परिस्थितियों से अनुकूलित करने में माहिर रही है। राजा के प्रशासन को एक दिन, अत्यधिक आबादी की भी समस्या आयेगी, पर उसके भी विभिन्न तरीकों के समाधान हो सकते हैं। शायद लोग बच्चे देर उम्र में और कम करने लगे, या बढ़ती आबादी की देखरेख करने के लिए और प्रौद्योगिकी उन्नति की जाएंगी। हो सकता है, वे ब्रह्मांड के दूसरे ग्रहों पर घर बसाने लगेंगे। कहानी के पात्रो ने जैसे आखिरकार दानव का नाश कर डाला, वो इन नई चुनौतियों का भी सामना कर लेंगे । फिलहाल हमें हमारे समस्याओं पर ध्यान देकर हमारे दानव, यानी वार्धक्य को नष्ट करने में ध्यान देना चाहिए।

श्रुति गुप्ता द्वारा अनुवादित